P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन

प्रतिष्ठा पुरोहित
एसोसियट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
लालकोठी स्कीम, जयपुर

सुशील कुमार मीणा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

वर्तमान समय में प्रमुख सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी विकास ने विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों का विकास किया है। आज मानवीय ज्ञान में भी तीव्रता से वृद्धि हो रही है। तकनीकी विकास के कारण संसार सिमटता जा रहा है और ज्ञान के विस्तार के साथ–साथ विद्यार्थियों में जिज्ञासा के कारण नित नवीन समस्याएँ प्रश्नगत हो रही हैं। इसलिए किसी विशेषज्ञ द्वारा उसके अनुभवों से विद्यार्थियों को उनकी क्षमता तथा योग्यता के अनुरूप उचित समस्या समाधान प्रदान करने हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए उसकी शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन, एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। इस शोध अध्ययन में सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में समानता पायी गयी।

मुख्य शब्द : शैक्षिक परामर्श।

प्रस्तावना

व्यक्ति विशेष हेतु अपने ज्ञान अथवा अनुभव का आदान प्रदान करने की प्रक्रिया निर्देशन कहलाती है। लेकिन जब किसी विशेषज्ञ द्वारा अपने अनुभव से किसी व्यक्ति को समस्या समाधान हेतु आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है तो वह प्रक्रिया परामर्श कहलाती है। जो कि निर्देशन प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। निर्देशन कार्यक्रम के अन्तर्गत सबसे महत्वपूर्ण स्थान परामर्श सेवा का है। परामर्श एक प्रक्रिया है, जिसमें एक विशेषज्ञ द्वारा व्यक्ति को समस्या समाधान हेतु आवश्यक सहायता प्रदान की जाती है। बढती हुई जनसंख्या, विज्ञान और तकनीकी के कारण तेजी से हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरुप मानव जीवन कठिन होता जा रहा है और उसे जीवन के हर मोङ पर परामर्श की आवश्यकता महसूस हो रही है।

रुचियाँ, अभिक्षमताएँ, अभिवृत्तियाँ, व्यक्तित्त्व, सामाजिक, वृत्तिक और पारिवारिक दशाएँ, कभी भी दो व्यक्तियों की एक जैसी नहीं होती हैं। वैयक्तिक विभिन्नताओं, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से वह विभिन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन करने में असहाय महसूस करता है।

वैबस्टर शब्दकोष के अनुसार – ''परामर्श का आशय पूछताछ, पारस्परिक तर्क–वितर्क अथवा विचारों का पारस्परिक विनिमय है।''

शैक्षिक परामर्श से आशय वैयक्तिक भिन्नता के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को जाँचना तथा वांछित स्तर बनाये रखना, उन्हें उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करना, विद्यार्थियों हेतु संगत पाठयक्रम का चयन और अधिगम समस्याओं का समाधान करना इत्यादि है। शैक्षिक परामर्श से हमारी शैक्षिक समस्याओं को जाँचने हेतु दृष्टि वस्तुनिष्ठ हो पाती है और वर्तमान शिक्षा प्रणाली को सही दिशा मिलती है। अतः परामर्श सेवा कई कारणों से आवश्यक हो गई है। उच्च माध्यमिक स्तर पर इसी महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए शोध अध्ययन हेतु इस समस्या का चयन किया गया।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर परामर्श तथा परामर्श सम्बन्धी आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम परामर्श के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ जैन, सूरमा, एस (2016) ने ''लाइफ स्किल्स काउन्सलिंग फॉर

एनहेन्सिंग द पर्सोनेलिटी ऑव हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स '' विषय पर शोध किया और पाया कि जीवन कौशल परामर्श, हाई स्कूल के विद्यार्थियोंके व्यक्तित्व को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारस (2016) ने एक शोध ''इम्पैक्ट ऑव करियर गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग ऑन स्टूडेन्ट्स करियर डेवलपमेन्ट'' किया जो बतलाता है कि निर्देशित तरीके से चलने वाले विद्यार्थियोंको सफलता और जीवन संतुष्टि प्राप्त होती है। जबकि मार्गदर्शन के बिना लिए गये निर्णय से असंतुष्टि प्राप्त होती है। अब्दुल एवं सुमंगला (2015) ने ''काउंसलिंग नीड्स ऑव हायर सैकण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑव केरला' एन एक्सप्लोरेशन इनटू द टीचर परसेप्सन'' का अध्ययन किया। जिसके परिणाम दर्शाते हैं कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियोंको उनके शिक्षकों द्वारा मजबूत परामर्श की आवश्यकता है तथा पुरूष एवं महिला शिक्षकों की विद्यार्थियों की परामर्श आवश्यकताओं की धारणा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। कोदक एवं काजी (2014) ने ''एमरजिंग एरिया ऑव काउंसलिंग इन स्कूल्स इन इण्डिया '' विषय पर अध्ययन किया और पाया कि भारत में स्कूल परामर्श का क्षेत्र स्कूली बच्चों की विभिन्न मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को रोकने और जवाब देने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कौशल है। पीटर एवम् अन्य (2013) ने ''असेस टू गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग सर्विसेज एण्ड इट्स इन्फ्लूएन्स ऑन स्टूडेन्ट्स स्कूल लाईफ एण्ड करियर च्वॉइस'' विषय का अध्ययन किया और पाया कि मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं तक पहुँचने का, अध्ययन और वृत्ति चयन के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण पर प्रभाव पडता है। रामाकृष्णन एवं जलजाकुमारी (2013) ने ''सिग्निफिकेन्स ऑव इम्पारटिंग गाइडेन्स एण्ड काउंसलिंग प्रोगाम्स फॉर एडोलसेन्ट स्टूडेन्ट्स'' विषय का अध्ययन किया। जो बतलाता है कि हमारे शैक्षणिक संस्थानों में सार्वभौमिक पैमाने पर मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं के परिचय के माध्यम से युवाओं को सार्थक चैनलों की सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करना आवश्यक है। यह लेख दर्शाता है कि मार्गदर्शन एवं परामर्श स्कूली विद्यार्थियों के बीच शैक्षिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक और अन्य समान समस्याओं को रोकने के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेणुका एवम् अन्य (2013) ने ''द इफैक्ट्स ऑव काउंसलिंग ऑन द अकादमिक परफॉरमेन्स ऑव कॉलिज स्टूडेन्ट्स'' विषय का अध्ययन किया। इस अध्ययन से पता चलता है कि कॉलिजों में परामर्श सेवाएँ छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर करने में प्रभावी रही हैं। एफिल्टी एवम् अरसलन (2017), फ्रेडरिक हर्ट्जबर्ग (2017), सलगोन्गा एवम् अन्य (2016),ऑहर्ट एवम् अन्य (2016), मपुरंगा एवं अन्य (2015), परगलेम अलेमू (2013), बबातुण्डे एवं ओसकिनले (2013), नीकोलेटा एवं कारमैन (2012), बिनर, येसिलपार्क (2012)ने अपने अध्ययन परामर्श तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

शोधकर्त्ता सुशील कुमार मीणा एवं शोध निर्देशिका डॉ. प्रतिष्ठा पुरोहित द्वारा स्वनिर्मित परामर्श मापनी।

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में सीकर जिले की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कला संकाय की कुल 100 छात्राओं; 50 शहरी एवं 50 ग्रामीण को, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करती हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. टी मान

परिकल्पना–1

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1.1
(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

छात्राएँ	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	अन्तर की मानक त्रुटि	मध्यमानों का अन्तर	स्वतंत्रता के अंश	आलोचनात्मक अनुपात
शहरी	50	57.46	7.59	1.6	1.02	98	0.637
ग्रामीण	50	56.44	8.39				

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की परामर्श मापनी के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 57.46 व 56.44 है तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 7. 59 व 8.39 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.6 है तथा मध्यमानों का अन्तर 1.02 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 0.637 है जो कि 98 स्वतंत्रता के अंश हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.97 से कम है। अतः परिकल्पना–1 स्वीकृत होती है अर्थात् सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

यद्यपि शहरी छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान ग्रामीण छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर की कला संकाय की शहरी छात्राएँ एवं ग्रामीण छात्राएँ शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की दृष्टि से समान होती हैं। उनके शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं के स्तर में कोई विशेष एवं सार्थक अन्तर नहीं होता है।

लेखाचित्र संख्या – 1
सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

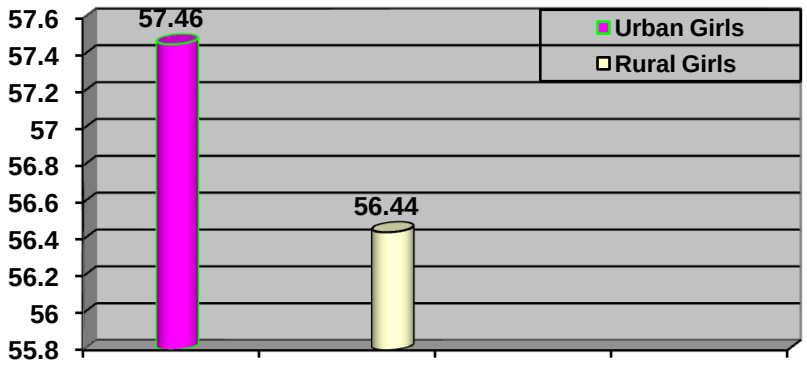

परिणाम

दत्त विश्लेषणानुसार सीकर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों में जो भी अन्तर है, वह केवल संयोगवश ही है। उच्च माध्यमिक स्तर की कला संकाय की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की परामर्श परिसूची के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 57.46 व 56.44 है, जो कि नगण्य अन्तर है। उक्त अर्थापन इंगित करता है कि सीकर जिले में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राएँ शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं के स्तर की दृष्टि से समान होती हैं। उनकी शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं के स्तर में विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला संकाय की छात्राओं की शैक्षिक परामर्श सम्बन्धी सेवाओं की आवश्यकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक सहायता प्रदाता अनुभवी विशेषज्ञ होने चाहिए तथा विद्यार्थियों को उनकी व्यक्तिगत विभिन्नता स्तर के अनुरूप परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए।
2. छात्राओं के व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण के विकास हेतु उचित शैक्षिक परिस्थितियों का निर्माण किया जाना चाहिए।

3. विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक सम्प्रत्यय एवं इसके विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल (1999), रिसर्च इन एज्यूकेशन : एन इन्ट्रोडक्शन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।*
2. *गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
3. *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
4. *जायसवाल, सीताराम (2008), शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
5. *मंगल, अंशु एवं अन्य (2004), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।*
6. *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
7. *Journal of Education and Practice, Volume 7, Issue 13, 2016, Pages 142–151*
8. *International Journal of Educational Research and Reviews, Vol. 3 No. 2,April 2015; pp. 038-046*

Websites

9. *www.eric.ed.gov*
10. *www.scholar.google.com*
11. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*